Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part – III (Hons)
Paper – V
Philosophy of Religion

1 "जीववाद" (Animism)

धर्म का प्रथम विकसित धारणा है। जीववाद के अनुसार प्रकृति की सारी वस्तुओं में एक जीव निवास करता है। जीववाद का अर्थ है वह विश्वास जिसके आधार पर लोग सभी चीजों में जीव या आत्मा को व्याप्त मानते हैं। जीव के बिना कहीं भी गति या घटना नहीं हो सकती है। जीव या आत्मा के स्वरूप की व्याख्या करते हुए टायलर ने कहा है कि यह एक प्रकार की छाया है जिस प्रकार मानव के पास आत्मा निवास करती है, इसी प्रकार विश्व की सारी वस्तुओं में आत्मा सन्निहित है। नदी, बादल, वृक्ष, पशु, पक्षी में एक आत्मा है जो एक दूसरे के समान है इस प्रकार विश्व का आधार चेतना है। मानव अपने अनुरूप विश्व की प्रत्येक वस्तु में आत्मा का दर्शन करता है। मानव के समान ही विश्व की वस्तुएँ मानव के हृदय में जिज्ञासा, आश्चर्य तथा भय की भावना का संचार करती है। मानव उन वस्तुओं की पूजा करता है जो मानव को आराम पहुँचाते हैं। भरने का मीठा पानी तथा पौधों के मीठे फल इसी कारण पूजा का पात्र हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त मानव उन वस्तुओं की भी आराधना करने के लिये बाध्य हो जाता है जो मानव के

लिए भयप्रद प्रतीत होते हैं। कालानाग, बाघ जैसे हिंसक जीव इसीलिए पूजा का विषय दीख पड़ते हैं। साँप की पूजा आज भी भारत, अमेरिका तथा मिस्र में प्रचलित है। बाघ की पूजा आज भी मलाया में प्रचलित है। इस प्रकार हिंसक पशु की पूजा जीववाद का मुख्य अंग है।

आधुनिक समय में भी आदिवासियों में ये मान्यताएँ हैं कि हैजा, चेचक, महामारी आदि बीमारियों तथा ऊँचे-ऊँचे पहाड़, बाढ़ लानेवाली नदियों तथा बड़े-बड़े वृक्षों में अनेक शक्तियों के प्रभाव होते हैं, इसी कारण उन शक्तियों को प्रसन्न करने के लिए अनेक प्रकार की भेंट, पूजा तथा बलिदान किये जाते हैं जिससे उन शक्तियों के दुष्प्रभाव से बचा जा सके। इस सन्दर्भ में रिजले ने एक शाल के वृक्ष का उदाहरण देकर जिसपर किसी नाम रहित पक्षी का निवास माना जाता था, यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि कभी-कभी ऐसा भी होता है कि पूजा में किसी का नाम नहीं लिया जाता और बिना नाम के ही पूजा की जाती है। नामवाद के विषय में विद्वानों ने जो मत व्यक्त किये उनमें जीववादी सिद्धान्त के दो

रूपों का पता चलता है जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है —

(1) पूर्वजों की पूजा — जैसा कि जीववाद के नाम से ही स्पष्ट है कि इसमें जीव अथवा मृत आत्माओं की ही पूजा की जाती है और इन जीवों को किसी भी विशिष्ट वृक्ष या प्राणी अथवा प्राकृतिक शक्ति में मान लिया जाता है। इस रूप में जीववाद का मुख्य तत्व पूर्वजों की पूजा है। जैसे — भारत में संथाल और ओरांव नामक जन जातियों में पितरों की आत्माओं की पूजा का विधान मिलता है। इनमें से संथालों में तो अपने-अपने कुल देवताओं तथा ग्राम देवताओं की पूजा की जाती है तथा कोरवा नामक जनजाति में तीन देवियाँ तीन ही कार्यों की अधिष्ठात्री मानी जाती हैं जिनमें एक वर्षा की, एक फसल की तथा एक पशुओं की देवी है इस प्रकार इन देवी देवताओं के पूजन में इन्हें प्रसन्न करने के लिए पशु-पक्षियों की बलि दी जाती है।

इसी प्रकार शक्तिशाली देवताओं के अतिरिक्त कुछ अन्य आत्माएँ भी ऐसी भी जिनका मनुष्यों से सम्बन्ध होता है। ये आत्मायें आनन्द तथा कष्ट का अनुभव मनुष्य के सम्पर्क से ही करती हैं। इसमें यह स्पष्ट है

कि इन जनजातियों की यह मान्यता होती है कि मृत्यु के पश्चात् भी आत्मा का अस्तित्व रहता है।

(2.) प्रेतात्माओं का पूजन-

पूर्वजों के अतिरिक्त प्रेतात्माओं की पूजा जीव-वाद का प्रमुख तत्व है। भारत में जो जीववाद के चिन्ह मिलते हैं उनमें मुख्य रूप से प्रेतात्माओं का ही पूजन किया जाता है। इतना ही नहीं अनेक रोगों का निदान भी झाड़-फूंक करके तथा जादू-टोना करके प्रेतात्माओं की शान्ति से किया जाता है। जब धान की फसल तैयार हो जाती है तब इन प्रेतात्माओं को मुर्गी की बलि चढ़ाई जाती है।

जीववाद के सम्बन्ध में एडवर्ड बी. टेलर ने कहा है कि "आदिम से सभ्य मनुष्य तक धर्म के दर्शनों का आधार जीववाद है।" इनके कथन से जीववाद के महत्व व इसकी व्यापकता का पता चलता है।

जीववाद और जीवीवाद (Animism and Animatism) जीववाद और जीवीवाद दोनों में ही वैसे तो पूर्वजों और प्रेतात्माओं की पूजा की जाती है किन्तु इनमें से जीववाद में प्रत्येक चेतन और अचेतन में जीव को माना जाता है जबकि जीवीवाद में चेतन और अचेतन में एक अवैयक्तिक शक्ति मानी जाती है। इस

प्रकार जीववाद के अनुसार चेतन वस्तुओं के समान ही जड़ वस्तुओं में भी जीवन होता है इसलिए ऐसे अचेतन वस्तुओं जैसे पेड़, हड्डियों तथा ऐसी ही छोटी-छोटी वस्तुओं की पूजा से ही समाज में शान्ति और सुख बढ़ते हैं।

जीववाद और जीवीवाद में अन्तर — जीववाद और जीवीवाद में मुख्य रूप से यह अन्तर किया जाता है कि जीववादी चेतन और अचेतन सभी वस्तुओं में जीव को मानते हैं जबकि जीवीवाद के अनुसार चेतन और अचेतन वस्तुओं में एक रहस्यमय अज्ञात और अवैयक्तिक शक्ति होती है। इसके अलावा जीववाद का एक रूप बोंगावाद है जिसमें बोंगा को एक ऐसी सर्वव्यापी निराकार के रूप में माना जाता है जो शरीर धारण करने की क्षमता रखती है। यह शक्ति, कुछ निश्चित पदार्थों में ही होती है। मुख्य रूप से बोंगो के दो रूप माने जाते हैं जिनमें एक सिंग बोंगा या सबसे बड़ा ईश्वर तथा दूसरे नागे बोंगा। इनमें नागे बोंगा को सिंग बोंगा की पत्नी के रूप में माना जाता है। इसके अलावा जीवीवाद के

बिहार की जनजातियों में उदाहरण मिलते हैं जिनमें वृक्षों और गुफाओं, पर्वत, पत्थर आदि को जीवन से भूत-प्रेत माना जाता है क्योंकि उनमें जादू की शक्ति समझी जाती है। इनमें से पत्थरों को भूमि माता के बच्चे समझकर उनकी पूजा की जाती है।